वैदिक काल से पूर्व भारतीय संगीत

डॉ. जया मिश्रा
नेहरू ग्राम भारती विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

संगीत और जीवन का अत्यन्त गहरा सम्बन्ध है। संगीत का जन्म उस समय हुआ जब मनुष्य ने लिखना–पढ़ना या बोलना भी नहीं सीखा होगा तब भी वह प्राकृतिक संगीत को सुनता व समझता था। पक्षियों के चहचहाने में, झरनों के गिरने में, हवा में, हर जगह व्याप्त सूक्ष्म संगीत को वह महसूस करता था। चूंकि संगीत प्रारम्भ से ही मानव के साथ रही है यही कारण है कि जीव मात्र की हर गतिविधियों में संगीत की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका दिखाई पड़ती है।

प्रत्येक स्थान की प्राकृतिक तथा भौगोलिक स्थिति का प्रभाव वहां की कला, संस्कृति, सभ्यता रहन–सहन, आचार–विचार, व्यापार व्यवसाय आदि पर पड़ता है। संगीत भी इससे अछूता नहीं है। यही कारण है कि भारत और विश्व के अन्य शांतिप्रिय देशों में किसी न किसी वजह से युद्ध या अन्य संकटों से घिरे वहां का संगीत एकदम अलग भाव लिए हुए है।

यह तो सर्वविदित है कि जिस चीज का विकास क्रमिक गति से होता है वह लम्बे समय तक अस्तित्व में रहती है। आज तक संगीत जीवित है इसका यही कारण है कि संगीत कई हजार वर्षों के उतार–चढ़ाव को देखते हुए ही विकसित हुई है।

अंधकार युग

भारत की प्राचीन सभ्यता एवं इतिहास का प्रारम्भ ईसा से लगभग 3500 वर्ष पूर्व स्वीकार किया गया है, जिसको सिन्धु घाटी की सभ्यता का इतिहास कहते हैं। किन्तु सिन्धु घाटी से पूर्व भी भारत में सभ्यता एवं संस्कृति विद्यमान थी। परन्तु उस समय का कोई प्रामाणिक तथ्य नहीं मिलता है इसी कारण इतिहासकारों ने इसे अन्धकार युग या प्रागैतिहासिक काल के नाम से सम्बोधित किया है। परन्तु कुछ विद्वानों ने इस युग के प्राप्त कुछ पाषाण चिन्ह एवं मूर्तियों, उसके आधार पर इस अन्धकार युग को चार भागों में बांटा है –

1. पूर्व पाषाण काल
2. उत्तर पाषाण काल
3. ताम्र काल

4. लौह काल

1.पूर्व पाषाण काल

इस काल में लोग जंगलों में निवास करते तथा पत्थरों के औजारों का प्रयोग जानवरों के शिकार में करते थे और उसी से अपना भरण–पोषण किया करते थे। इस काल में भी मानव को संगीत का ज्ञान था। लोग अपनी खुशी व प्रसन्नता को व्यक्त करने के लिए संगीत का प्रयोग करते थे। यह बात अलग है कि भाषा ज्ञान के अभाव में ''हू–हू हेवा हा हा'' आदि जैसे निरर्थक शब्दों का प्रयोग करते थे। पत्थर से बना एक वाद्य यंत्र प्राप्त हुआ है जो इसी काल का है। इतिहास कारों ने इसे 'अस्सा' नाम दिया है। परन्तु इस वाद्य के विषय में विद्वानों में मतभेद है कुछ विद्वान इसे वाद्य मानते हैं तो कुछ इसे औजार। यही कारण है कि कुछ इतिहासकार यह मानते हैं कि संगीत मानव के लिए लय–स्वर–ताल–युक्त मनोवेगों के धुंधले कुहासे से प्रारम्भ हुआ। जानकारों का मानना है कि पहला वाद्य स्वयं मानव शरीर है जो पैर पटक कर, ताली बजाकर, जांघों व नितंबों को पीटकर लय–ताल उत्पन्न करने के काम आता होगा। इससे यह तो स्पष्ट है कि इस काल का संगीत अपने प्रारम्भिक दौर में था। इस काल के संगीत का प्रभाव आज भी कई स्थानों से सुनने को मिलता है जैसे अण्डमान द्वीप समूह, मलाया द्वीप समूह, फिलीपीन्स आदि।

2.उत्तर पाषाण काल –

इस काल में लोग पूर्व पाषाण काल के लोगों की अपेक्षा अधिक सभ्य और सुसंस्कृत थे। ये पत्थरों का भी उचित प्रयोग करने लगे थे। इनका संगीत भी पूर्व की अपेक्षा विकसित था। इस समय सामाजिक भावना का उदय होने के कारण सामूहिक संगीत विकसित हो गया था। मिस्टर टर्नेल लिखते हैं कि ''संगीत ने इन लोगों को सभ्यता की ओर झुकाया था।'' पुरुष और स्त्री दोनों ही अपना काम करते समय संगीत का प्रयोग करते तथा उसका आनंद उठाते थे। उस काल में लोगों को स्वरों के साथ–साथ चित्रकला का भी ज्ञान हो गया था। ये समूह के रूप में कन्दराओं में निवास करते थे। कन्दराओं की दीवारों को आखेट, तथा नृत्य के चित्रों द्वारा अलंकृत करते थे। उस समय के भित्ति चित्रों में सांगीतिक आभा तथा प्रेम प्रचुर मात्रा में दिखता है। इस काल में एक विशेष प्रकार के अनवद्ध वाद्य का प्रयोग होत था जो एक पेड़ को खोखला कर उसके दोनों सिरों को चमड़े से मढ़कर बनाया जाता था इस वाद्य का प्रयोग सांस्कृतिक आयोजनों के साथ–साथ अन्य उद्देश्य से भी किया जाता था।

3.ताम्रकाल

कुछ विद्वानों का मत है कि आर्यों के आगमन से पूर्व द्रविड़ उत्तरी भारत में बसे थे। ये लोग धातुओं के प्रयोग से भली–भांति परिचित थे। तांबे का प्रयोग शिकार के लिए इस्तेमाल होने वाले औजारों के निर्माण में भी होने लगा था। इस काल में सभ्यता व संस्कृति का खूब विकास हुआ। इस युग में संगीत को धार्मिक रूप प्रदान किया गया। इस काल के लोगों का विश्वास था कि सांगीतिक प्रदर्शन से देवी–देवताओं को प्रसन्न कर वो अपने कष्टों का निवारण कर सकते हैं। इस काल में लोगों को अवनद्ध वाद्य के साथ–साथ तत् वाद्य का भी ज्ञान हो चुका था। वासुदेव जी ने लिखा है कि एक आदमी तार का बाजा बजा रहा है, स्त्री पुरुष झुण्ड में एक साथ जोड़े बनाकर नाच रहे हैं। कुछ आदमी ढोल या दुहरीनाएं बजा रहे हैं। ऐसा चित्रों में देखने को मिलता है। कुछ विद्वानों का मानना है कि इस काल के लोगों ने धार्मिक दृष्टिकोण के साथ–साथ संगीत को वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ–साथ संगीत को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी अपनाया था। उन्होंने संगीत का प्रयोग चिकित्सा के क्षेत्र में किया जिसमें उनको पूरी सफलता मिली थी। परन्तु इस विषय में प्रामाणिक तौर पर कुछ नहीं कहा जा सकता।

4.लौहकाल

इस काल के मनुष्यों को लौह धातु का ज्ञान हो चुका था। अन्य धातुओं की अपेक्षा इस काल में लौह धातु से बने औजारों तथा वाद्य यंत्र का प्रयोग बढ़ गया था। इस काल का संगीत भी धर्म से प्रभावित था। ये लोग विवाह आदि सामाजिक उत्सवों पर अपने त्योहारों में संगीत का खूब प्रयोग करते थे। पुरुष तथा स्त्रियां दोनों ही समान रूप से नृत्य में रुचि रखते थे। तरह–तरह के वाद्य यंत्रों का प्रयोग संगीत के लिए किया जाता था जिसे बजाने में पुरुषों के साथ–साथ स्त्रियां भी निपुण होती थीं।

सिंधु घाटी की सभ्यता का काल

भारत की प्राचीन विकसित एवं प्रामाणिक सभ्यता एवं संस्कृति का दर्शन सिन्धु घाटी की सभ्यता से होता है। पुरातत्व विभाग ने अनेक स्थानों पर खुदाई करके अनेक मूर्ति, चित्र, खण्डहर, हथियार, आभूषण, सिक्के आदि प्राप्त किए हैं जिससे यह स्पष्ट है कि यही भारत की सबसे प्राचीन सभ्यता है। खुदाई से प्राप्त सामग्री के आधार पर सन जान मार्शल तथा उनके अनुयायियों ने इसका समय 5000 से 6000 ईसा पूर्व माना है जबकि इस काल की मुद्राओं को देखकर प्रो. लैंगडन तथा मि. गैंड इसका समय 2800 ई0पू0 मानते हैं। डा0 राधामुकुद मुखर्जी ने इसका काल 3250–2750 माना तो डा. मैके ने इस सभ्यता का विकास काल 2500 ई0पू0 स्वीकार किया है। पुरातत्ववेत्ताओं का अनुमान है कि इस सभ्यता

का आरम्भ ईसा से लगभग 5000 वर्ष पूर्व हुआ होगा जबकि इसका अंतिम छोर 2700ई0पू0 का लगभग होगा।

कुछ विद्वानों के अनुसार सिधु सभ्यता अत्यन्त विकसित एवं सुसंस्कृत सभ्यता थी। इस काल के लोगों का वाह्य संस्कृति के लोगों से आदान प्रदान शुरू हो गया था। व्यापार के माध्यम से तत्कालीन लोग मेसोपोटामिया, पश्चिमी फारस, मिस्र सेस्टन जैसे स्थानो पर यात्रा कर आते थे। इस व्यापारिक आदान–प्रदान के साथ–साथ राजनैतिक–सामाजिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक आदान प्रदान में शुरू हो गया था।

कुछ विद्वानों के अनुसार यह सभ्यता अपने समय का सर्वाधिक विकसित सभ्यता है। खुदाई से जो चीजें प्राप्त हुई वह इसका प्रमाण है। खुदाई में प्राप्त मोहरों से यह स्पष्ट है कि उस काल में लोग भी गायन के साथ–साथ वादन कला से भी परिचित थे। चीनी मिट्टी की एक मुद्रा में कुछ व्यक्ति शेर के सामने ढोल व दुन्दुभि बजा रहे हैं। आज भी आदिवासी लोग किसी हिंसक पशु के आगमन पर ऐसा ही करते हैं। कुछ मुद्रा तथा ताबीज पर वीणा जैसे किसी वाद्य का चित्र बना है। नृत्य करती स्त्री की मूर्ति तथा एक वृक्ष के सम्मुख नृत्य करते कुछ लोगों के चित्रों से यह तो स्पष्ट है कि इस काल में पुरुष व स्त्रियां दोनो गायन–वादन तथा नृत्य का ज्ञान रखते थे। अतः यह तो स्पष्ट है कि इस काल में पुरुष व स्त्रियां दोनों गायन–वादन तथा नृत्य का ज्ञान रखते थे। अतः यह तो स्पष्ट है कि वैदिक काल में संगीत जिस सर्वोच्च शिखर पर पहुंचा, उसकी नींव सिन्धु घाटी की सभ्यता में ही रखी गई थी।

यह सभ्यता वैदिक काल से पूर्व की है। इसे प्रागवैदिक काल के नाम से भी जाना जाता है। इस विषय में भी विद्वानों में बड़ा मतभेद है। जैसे सन जान मार्शल, कार्डियल सोम्स, पिगट, रायबहादुर, दयाराम साहनी आदि विद्वान इसको प्राग्वैदिक मानते हैं जबकि स्वामी शंकरानंद, डॉ. लक्ष्मण स्वरूप आदि विद्वान इसे वैदिक काल का ही प्रथम चरण मानते हैं। कुछ विद्वानों ने इस सभ्यता के भारतीय अथवा अभारतीय होने पर विचार व्यक्त किए परन्तु खनन से प्राप्त सामग्री से यह स्पष्ट हो गया कि यह सभ्यता भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का ही अभिन्न हिस्सा है।

सैन्धव सभ्यता का संगीत

सिन्धु घाटी की खुदाई में संगीत संम्बन्धी अनेक सामग्री मिली है जिससे ऐसा लगता है कि तत्कालीन संगीत अत्यंत विकसित अवस्था में था। इन सामग्रियों में मुख रूप से नृत्यरत मूर्तिर्या, विभिन्न वाद्य–बांसुरी, तन्त्रयुक्त वीणा, चमड़े के अनेक प्रकार के वाद्य, मृदंग, कांसे की नृत्यशील नारी पुरुष की

मूर्तियां, मुद्राओं पर अंकित अनेक चित्र आदि। इनसे ज्ञात होता है कि भारतीय संगीत का स्तर बहुत उत्कृष्ट था। ऐसी कलात्मक मूर्ति का निर्माण एक कला एवं संगीतप्रिय सभ्यता के लोगों द्वारा ही सम्भव है। नृत्यांगना की मूर्ति से स्पष्ट होता है कि सिन्धु निवासी नृत्यकला के विभिन्न हाव–भाव से परिचित थे तथा इसकी विधिवत शिक्षा का भी प्रबन्ध था।

खुदाई से जो भवनों के खण्डहर मिले हैं उनकी दीवारों पर भी सांगीतिक चित्र मिले हैं इससे स्पष्ट है कि उस समय जीवन के प्रत्येक क्षण में संगीत विद्यमान था। धार्मिक एवं सामाजिक समारोहों के गीत, वाद्य तथा नृत्य तीनों का प्रयोग होता था। झांझा, करताल आदि के साथ–साथ ढोल का प्रयोग भी प्रचलित था। इस काल के लोगों को सभ्यता, संस्कृति व कला के प्रत्येक अंग का समुचित ज्ञान था। पं. जवाहर लाल नेहरू ने लिखा है कि– ''सिन्धु धाटी की सभ्यता, जैसे भी हम उसे जान सके हैं एक बड़ी तरक्कीयाफ्ता थी और उसे इस दर्जे तक पहुंचने में बहुत साल लगे होंगे।''

इससे यह तो स्पष्ट है कि आर्यों के आगमन से पूर्व भी भारतीय संस्कृति विश्व में अग्रणी स्थान रखती थी।

संदर्भ :

1. डॉ. ईश्वरी प्रसाद, प्राचीन भारतीय संस्कृति, कला, राजनीति, धर्म, दर्शन
2. डॉ. शर्मा स्वतंत्र, भाारतीय संगीत का ऐतिहासिक विश्लेषण।
3. जोशी उमेश, भारतीय संगीत का इतिहास।
4. पूनिया बी.एन., भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का विकास
5. अग्रवाल वासुदेव शरण, कला और संस्कृति
6. नेहरू पंडित जवाहर लाल, अनुवादक राम चन्द्र टण्डन, हिन्दुस्तान की कहानी।
7. डॉ. जोशी रसिक बिहारी, वैदिक साहित्य की रूप रेखा।

****